IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विश्व में हिंदी

Hindi in the World

मलिक मुहम्मद / Malik Mohammad

शोध निर्देशक प्रो. राम पाल गंगवार / Prof. Ram pal Gangwar

प्रस्तावना :

हिंदी विश्व की लगभग 3000 भाषाओं में से एक है और यूरोपीय परिवार की भाषा है। हिंदी की आदि जननी अपभ्रंश भाषा है। हिंदी संस्कृत, पालि, प्राकृत भाषा से होती हुई अपभ्रंश तक पहुंची है फिर अपभ्रंश अवहट्ट से गुजरती हुई प्राचीन/प्रारम्भिक हिंदी का रूप लती है। सामान्यतः हिंदी भाषा के इतिहास का शुरू अपभ्रंश से ही माना जाता है। हिंदी भारत की एक राष्ट्रीय भाषा है। विश्व स्तर पर हिंदी की अस्मिता बनी हुई है। हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पंहुचने के लिए अनेक संघर्ष करने पड़े है। जिसके बाद हिंदी विश्व स्तर पर अपनी भूमिका बना पाई है। यूँ तो भारत में लगभग 22 भाषाएँ बोली जाती हैं। लेकिन इनमें से हिंदी सबसे आधिक बोली जाने वाली भाषा के रूप में सामने आई। 14 सितंबर 1950 में जब संविधान लागू हुआ तभी से विश्व स्तर पर 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाने शुरुआत कर दी गई। जब से यह दिवस मनाने की घोषणा हुई तब उसकी वजह थी संविधान की भाषा हिंदी का सम्मान करना। आज इसकी वैश्विक स्थिति सम्मानीय और प्रगतिवान है। हिंदी के महत्व के संदर्भ में भारतेंदु हरिशचन्द्र ने लिखा है-

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति का मूल

बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत ना हिय का सूल।"

संवैधानिक रूप से भारत की प्रथम राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा हिंदी है। जागरण के मुम्बई ब्यूरो सम्पादक ओम प्रकाश तिवारी के अनुसार 2015 में विश्व में हिंदी बोलने वालों की संख्या विश्व में सबसे अत्यधिक हो चुकी है और लगभग 130 करोड़ लोग विश्व के 160 देशों में हिंदी बोल रहे हैं। **विश्व आर्थिक मंच की गणना के अनुसार यह विश्व के दस शक्तिशाली भाषाओं में से एक है।** हिंदी विश्व भाषा के रूप में वैश्विक पटल पर उभरी है। फिजी, मॉरिशस, गयाना, सूरीनाम और नेपाल की जनता भी हिंदी बोलती है। फिजी में हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है।

भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार भाषा का प्रयोग अपने परिवेश, स्थिति तथा संदर्भ के अनुसार करता है। आज के परिवेश एवं संदर्भ के अनुसार हिंदी भाषा केवल साहित्यिक या संप्रेषण की भाषा नहीं रही। वह तो कामकाज, कार्यपद्धति, विज्ञान तकनीक, प्रौद्योगिकी, विधि, चिकित्सा, वाणिज्य के साथ-साथ संगणक, सेल्युलर, इंटरनेट, सैटेलाइट, सूचना, सुपर हाइवे की भाषा बनने लगी है। जनसंचार माध्यमों की समाज सापेक्ष्य सेवा माध्यम के रूप में उपयोग हो रही है। सामाजिक संदर्भ के गतिशील प्रवाह में अपने-अपने गुणों को बढ़ा रही है। संचार भाषा के सभी गुण हिंदी में है। जिसके कारण यह आज विश्व भाषा बन रही है। विश्व पटल पर हिंदी का दूसरा महत्त्वपूर्ण पक्ष है, विश्वबोध। हिंदी का संबंध संस्कृत, पालि और भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अरबी, फ़ारसी, तुर्की, अंग्रेज़ी, स्पेनिश, डच, पुर्तगाली आदि कई भाषाओं से है।

हिंदी विश्व के प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण देशों के विश्वविद्यालयों में अध्ययन- अध्यापन में भागीदार है। अकेले अमेरिका में ही लगभग एक 150 से ज्यादा शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी का पठन-पाठन हो रहा है। आज जब इक्कीसवीं सदी में वैश्वीकरण के दबावों के चलते विश्व की अधिकतर संस्कृतियाँ एवं भाषाएँ आदान-प्रदान व संवाद की प्रक्रिया से गुज़र रही हैं तो हिंदी इस दिशा में विश्व मनुष्यता को निकट लाने के लिए सेतु का कार्य कर सकती है। उसके पास पहले से ही बहु सांस्कृतिक परिवेश में सक्रिय रहने का अनुभव है जिससे वह अपेक्षाकृत ज्यादा रचनात्मक भूमिका निभाने की स्थिति में है। हिंदी सिनेमा अपने संवादों एवं गीतों के कारण विश्व स्तर पर लोकप्रिय हुआ है। हिंदी सिनेमा ने सदा-सर्वदा से विश्वमन को जोड़ा है। हिंदी की मूल प्रकृति लोकतांत्रिक तथा रागात्मक संबंध निर्मित करने की रही है। वह विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की ही राष्ट्र भाषा नहीं है बल्कि पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, फिजी, मॉरीशस, गुयाना, त्रिनिदाद तथा सुरीनाम जैसे देशों की संपर्क भाषा भी है।

हिंदी भाषा न केवल भारतवर्ष की आत्मा है, बल्कि यह अब विश्व पटल पर भी अपनी उपस्थिति सशक्त रूप से दर्ज करा रही है। वैश्वीकरण के इस युग में हिंदी का प्रचार-प्रसार एक नई दिशा और गति प्राप्त कर रहा है। प्रस्तुत आलेख "विश्व में हिंदी" इसी क्रम में एक विनम्र प्रयास है, जिसके माध्यम से तीन देशों अफ़गानिस्तान, उज़्बेकिस्तान और जापान में हिंदी की स्थिति का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

इन देशों में हिंदी भाषा, हिंदी साहित्य और हिंदी विभागों की स्थापना एवं गतिविधियों का विश्लेषण कर यह जानने का प्रयास किया गया है कि हिंदी किस प्रकार से सीमाओं का अतिक्रमण कर वैश्विक संवाद की भाषा बन रही है। यह आलेख न केवल हिंदी प्रेमियों के लिए उपयोगी है, बल्कि यह हिंदी की वैश्विक स्वीकृति और सम्मान को भी उजागर करती है।

यह छोटा सा प्रयास हिंदी भाषा की व्यापकता, उसकी प्रासंगिकता और उसके भावी विस्तार की संभावनाओं को रेखांकित करता है। आशा है कि यह आलेख हिंदी के अंतरराष्ट्रीय स्वरूप को समझने में सहायक सिद्ध होगा।

बीज़-शब्द : वैश्विक, राष्ट्रभाषा, संविधान, विश्वस्तरीय, अतिक्रमण, व्यापकता, प्रासंगिकता, लोकतांत्रिक, रागात्मक, भारतवंशीय, प्रवाहमान।

मूल-आलेख :

सर मुहम्मद इकबाल ने क्या खूब कहा है "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा, हम बुलबुले है इसकी ये गुलिस्तां हमारा।" सचमुच हिन्दुस्तान का विश्व पटल में एक अलग ही स्थान है। चाहे वह भाषा, संस्कृक्ति, कला, साहित्य, दर्शन, खान-पान, रहन-सहन, पर्व-त्यौहार आदि तमाम संस्कार भारतीयता के विविध संदर्भ को दर्शाते हैं।

किसी भी भाषा को विश्वव्यापी भाषा का दर्जा कई कारणों से प्राप्त होती है, उसमें जो प्रमुख वजहे है वह उस भाषा का प्रयोग करने वाले लोगों की अधिकता है इस रुप में आज हिंदी बोलने-लिखने एवं संपर्क करने वाले लोगों की संख्या भारत में ही नहीं बल्कि दुनिया के लगभग सभी देशों में मिलती है। एक तथ्य यह भी है कि चीनी भाषा के बाद हिंदी विश्व में सबसे अधिक व्यवहार होने वाली भाषा बन चुकी है। "टोक्यो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर होजुमि तनाका के अनुसार हिंदी बोलने वाले लोगों का स्थान दूसरा है, जबकि चीनी का प्रथम और अंग्रेजी तीसरे स्थान पर पहुंच गई है। वैश्विक भाषा की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता है कि उस भाषा में रचे गए साहित्य की एक विस्तृत परंपरा हो तथा उसमें विधाएँ वैविध्यपूर्ण एवं समृद्ध हों, उस भाषा के पास विपुल मात्रा में शब्द भण्डार हो, जिससे विश्व की अन्य भाषाओं से विचार-विनिमय सहज रूप से हो सके, साथ ही वह भाषा दूसरी भाषाओं को प्रभावित करने में सक्षम हो।" इस दृष्टि से हिंदी भाषा के आस-पास साहित्य सृजन की लगभग 1000 वर्ष सुदीर्घ परंपरा दिखाई देती है, जिसके पास शब्द का अकूत भंडार है। आज हिंदी भारत तक ही सीमित नहीं, भारत की सीमाओं से बाहर दूर-दूर के देशों में भी उसकी अलग पहचान बन रही है जैसे मॉरीशस, फिजी, गयाना, सूरीनाम

आदि देशों में जहाँ भारतवंशीय पर्याप्त संख्या में हैं, वास्तव में भाषा बहता नीर की धारणा के रूप में देखें तो हिंदी की अविरल धारा धीरे-धीरे पूरे विश्व में प्रवाहमान दिखाई देती है।[1]

वैश्विक संदर्भों में हिंदी ने अनेक कारणों से अपनी पहचान और महत्त्व कायम किया है। आज विश्व के लगभग 200 से बहुत विश्वविद्यालय और शोध संस्थानों में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन, अनुसंधान संबंधी कार्य प्रारंभिक से लेकर उच्च स्तर तक किया जा रहा है। हिंदी की वैश्विक स्वीकृति और पहचान के संदर्भ में यह स्थिति आधिक ही सुखदायी है। अमेरिका में लगभग दो करोड़ से अधिक भारतीय हैं। मिशीगन, हार्वर्ड, पेन, येल आदि 75 विश्वविद्यालय में विश्व भाषा के रूप में हिंदी पढ़ाई जा रही है। अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति, विश्व हिंदी समिति, हिंदी न्यास जैसी हिंदी संस्थाएँ अमेरिका के संदर्भ में लगातार हिंदी की उन्नति और विस्तार को सुनिश्चित कर रही हैं। भारतीय भाषा संगम, गीतांजलि, बहुभाषिक समुदाय, यू.के. हिंदी समिति, हिंदी भाषा समिति, चौपाल कृति यू. के., कथा यू. के. आदि प्रमुख संस्थाएँ इंग्लैंड में हिंदी के प्रगति के लिए लगातार काम कर रही हैं और हिंदी के वैश्विक प्रगति में अपना महत्त्वपूर्ण भागीदारी दे रही हैं। जापान में लगभग 850 कॉलिजों में हिंदी अध्यायन जा रही है। ओसाका, टोक्यो, ताइको, ओतान, ओचेमन, माईकून, कानन विदेशी विश्वविद्यालय आदि हिंदी और हिंदी संबंधी शैक्षिक उपक्रमों की दृष्टि से अधिक अहम संस्थान हैं। मॉरीशस में हिंदी के प्रति विशिष्ट प्रेम दिखाई देता है। यहाँ लगभग 254 प्राथमिक पाठशालाओं और 64 लगभग माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी के पठन-पाठन की व्यवस्था है। महात्मा गांधी संस्थान में हिंदी की उच्च शिक्षा का समुचित प्रबंध किया गया है। 1988 से हिंदी का डिप्लोमा कोर्स, 1990 से बी. ए. ऑनर्स हिंदी, 2001 से एम. ए. हिंदी का प्रावधान विद्यमान है। समनानंतर, 585 से ज़्यादा अध्यापक हिंदी खिदमत में लगे हुए हैं। हिंदी प्रचारिणी सभा, महात्मा गांधी संस्थान, आर्य समाज, सनातन धर्म सभा आदि अनेक हिंदी सेवी संस्थाएँ तथा विश्व हिंदी सचिवालय भी हिंदी को वैश्विकता प्रदान करने के लिए मॉरीशस में ही स्थित और कार्यरत है। फिजी में सनातन धर्म, आर्यसभा, गुरुद्वारा कमेटी, आंध्र संगम आदि अनेक संस्थाएँ कार्यरत हैं। यहाँ 1916 से हिंदी अध्ययन-अध्यापन हेतु हिंदी पाठशालाएँ स्थापित की गई हैं, जो लगातार हिंदी के प्रगति और विस्तार में लगी हुई हैं। नीदरलैंड में लगभग 2.25 लाख भारतवंशी हैं। यहाँ चार विश्वविद्यालयों लायडन, एम्सटर्डम, यूटरेक्ट खोनिगन एवं हिंदी परिषद्, हिंदी प्रचार संस्था समिति, हिंदू स्कूल संस्थाएँ, हिंदू ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन, उच्च हिंदी समिति आदि संस्थाएँ लगातार हिंदी को बढ़ावा देने के लिए कार्यरत हैं। रूस में प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक हिंदी का पठन-पाठन होता है। अंतर्राष्ट्रीय संबंध संस्थान, प्राच्य अध्ययन संस्थान, मॉस्को विश्वविद्यालय, रूसी मानविकी विश्वविद्यालय, सेंट पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय सहित दो दर्जन संस्थानों में 3500 से अधिक रूसी छात्र हिंदी का अध्ययन कर रहे हैं। रूस के कजान, करोलिया, तारुस, बोशकोतोरस्तान, चुवाशिया, जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र आदि में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। पोलैंड में हिंदी भाषा और साहित्य वारसा, क्राकब, पोजनान विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है। इटली में वेनिस, टूरिन, रोम, ओरिएंटल, मिलान विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा पढ़ाई जा रही है। इसी तरह फिनलैंड के हेलसिंकी, स्वीडन के स्टॉकहोम, डेनमार्क के कोपेनहेगन, नार्वे के ओस्लो, चीन के पेइचिंग, नानचिड़, नेपाल के त्रिभुवन, श्रीलंका के कोलंबो विश्वविद्यालय में हिंदी के पठन-पाठन की समुचित व्यवस्था प्राप्त होती है, जो हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय फलक पर स्थापित और विस्तारित करने का महत्त्वपूर्ण काम कर रही है। खुद भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् ने क़रीब दो दर्जन देशों में हिंदी पीठ की निर्माण की है। संक्षेप में कह सकते है कि हिंदी शिक्षण के केंद्र हिंदी के प्रगति और विस्तार को बल प्रदान कर रहे हैं तथा विश्वभाषा के रूप में हिंदी भाषा को पुष्पित, पल्लवित और प्रगतिशील होने में अधिक महत्त्वपूर्ण मदद कर रहे हैं।[2]

- **अफ़ग़ानिस्तान में हिंदी :**

भारत एवं अफ़ग़ानिस्तान (افغانستان) का संबंध बहुत पुराना एवं अटूट रहा है। कहते हैं कि भारत के आर्य लोग प्राचीन समय में वर्तमान अफ़ग़ानिस्तान के पहाड़ी इलाक़ों से आये हैं, इसलिए बाद में भी अफ़ग़ानिस्तान के लोगों का भारत भूमि में आना-जाना लगातार रहा है। प्राचीन काल से भारत और अफ़ग़ानिस्तान की गहरी मित्रता रही है। प्राचीन काल से दोनों देशों के आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबंध बहुत अच्छे रहे हैं, इसलिए दोनों देशों के मूल निवासी हमेशा संपर्क में रहे हैं।

अफ़ग़ानिस्तान का नाम, अफ़ग़ान (افغان) और स्थान या (स्तान) जिसका मतलब भूमि होता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है अफ़ग़ानों की भूमि। स्थान या (स्तान) भारत की प्राचीन भाषा संस्कृत का शब्द है पाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, कज़ाक़िस्तान, हिन्दुस्तान इत्यादि जिसका अर्थ है भूमि या देश। अफ़ग़ान का अर्थ यहाँ के सबसे अधिक वसित नस्ल (पश्तून) को कहते हैं। अफ़ग़ान शब्द को संस्कृत अवग़ान से निकला हुआ माना जाता है। ध्यान रहे की "अफ़ग़ान" शब्द में ग़ की ध्वनी है और "ग" की नहीं। "स्टेन" का अर्थ है भूमि। अफ़ग़ानिस्तान का अर्थ है अफ़ग़ानों की भूमि। शब्द "स्टेन" का उपयोग कुर्दिस्तान और उज़बेकिस्तान के नामों में भी किया जाता है।[3]

प्राचीन युग से लोक कथाओं में भारत (हिन्दुस्तान) का नाम आता था, जिससे ज़्यादातर अफ़ग़ान लोग परिचित थे, मगर आज प्रत्येक अफ़ग़ान भारत के नाम से परिचित हैं, यहाँ तक कि सभी अफ़ग़ान लोग भारत को एक पक्का एवं बाईमान मित्र की तरह मानते हैं। जब भी औपचारिक या अनौपचारिक रूप से किसी पत्र में भारत का नाम लिखना पड़ता है तो भारत के नाम से पहले मित्र शब्द का प्रयोग अवश्य किया जाता है। यानी **(दोस्त हिवाद हिन्दुस्तान-मित्र देश हिन्दुस्तान)** लिखते हैं। इससे भारत के प्रति अफ़ग़ान सरकार एवं जनता की सहानुभूति एवं प्यार प्रमाणित होता है।

उपर लिखित कारणों से, प्राचीन युग से ले कर अब तक अफ़ग़ानिस्तान में ऐसे लोग बहुत देखने को मिलते हैं, जिनको हिंदी भाषा का मौखिक रूप खूब आता हो। इस नये युग में दो और महत्वपूर्ण कारण है, जिससे अफ़ग़ानिस्तान के कुछ लोगों को हिंदी भाषा के मौखिक रूप से परिचित होना पड़ा।

हिंदी फ़िल्में वह पहला आधार हैं जहाँ भारत अफ़ग़ानिस्तान मिलते हैं। हिंदी फिल्में जिस तरह पूरी दुनिया में चलती है, उससे अधिक मात्रा अफ़ग़ानिस्तान में भी चलती हैं बल्कि भारत की तरह ही हिंदी फिल्में एवं हिंदी फिल्मों के गाने पूरे अफ़ग़ानिस्तान में लोग बड़े दिलचसपी एवं चाव से देखते और सुनते हैं। आम बाज़ार में चलते समय किसी न किसी दुकान से हिंदी गानों की ध्वनि ज़रूर सुनने को मिलती है। अफ़ग़ानिस्तान के टी.वी एवं एफ.एम रेडियों से लगातार आपको हिंदी गाने सुनने को मिलते हैं और लोग उसके फरमाइश भी बहुत देते हैं। वर्तमान युग में अधिक प्रतिशत अफ़ग़ान लोग विशेष कर जवान लोग हिंदी फिल्मों के आदाकारों से खूब परिचित हैं। यहाँ जब किसी जवान की प्रशंसा की जाती है तो उसे बॉलीवुड के किसी अभिनेता के नाम से बताया जाता है, इसी प्रकार अफ़ग़ानिस्तान में जब लड़की की रिश्ता माँगने लोग जाते हैं, वापिस आने पर जब लोग लड़की की सुन्दरता के बारे में पूछते हैं, तो उसका वर्णन बॉलीवुड की किसी अभिनेत्री के रूप में किया जाता है कि, वह बिल्कुल फलाँ अभिनेत्री जैसी है। वैसे तो महिलाओं की सुंदरता माशाल्लाह किसी से कम नहीं है, लंबा कद, गेहुँआ रंग और सुनहरी आँखें, हर दूसरी घर की बेटी बॉलिवुड की किसी अभिनेत्री (ऐश्वर्या, करीना कपर, सोनम कपूर, रानी, काजोल, आलिया भट्ट आदि) के नाम से तुलना की जाता है।

अन्तिम चार दशकों से बहुत सारे अफ़ग़ान लोगों को पाकिस्तान जाना एवं वहाँ बसना पड़ा तो पाकिस्तान में रह कर उर्दू भाषा सीख गये, जिसका मौखिक रूप आज की हिंदी के मौखिक रूप से काफ़ी हद तक मिलता जुलता है। अनौपचारिक स्तर पर हम यह कह सकते हैं कि अफ़ग़ानिस्तान के अधिकतर युवक-युवतियों को हिंदी भाषा का मौखिक रूप थोड़ा बहुत आता ही है, जिसके कारण ऊपर बताएँ जा चुके हैं। एक बात और उल्लेखनीय है कि वर्ष 2021 से पहले भारत सरकार के भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR) छात्रवृत्ति योजना में हज़ारों अफ़ग़ान युवा-युवती भारत में भिन्न-भिन्न विषयों को पढ़ने के लिए आते थे और भारत में रह कर हिंदी भाषी (भारतीय) लोगों के साथ में हिंदी भाषा सीख लेते थे। इसके साथ-साथ बहुत से अफ़ग़ान छात्र-छात्राओं ने अपने खर्चे से भारत आकर शिक्षा प्राप्त करते हैं। अफ़ग़ानिस्तान से अधिकतर रोगी लोग भी इलाज करवाने के लिए भारत आते-जाते हैं। वर्तमान में भारत सरकार के भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR) छात्रवृत्ति योजना की प्रक्रिया को कुछ कारणों से स्थगित कर दिया गया है, अफ़ग़ानिस्तान के छात्र-छात्राओं के लिए आशा करता हूँ कि ICCR छात्रवृत्ति योजना की प्रक्रिया पुनः आरंभ हो जाए। दोनों देशों के व्यापारिक एवं राजनीतिक आदि संबंधों की श्रृंखला भी और दृढ़ हो सकती हैं।

औपचारिक तौर पर अफ़ग़ानिस्तान में एक ही संस्था है, जहाँ हिंदी भाषा एवं साहित्य के पठन-पाठन की व्यवस्था पिछले 18 सालों से चली आ रही है, जिसमें स्नातक स्तर पर चार वर्षीय पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा एवं साहित्य अफ़ग़ान हिंदी अध्यापकों द्वारा पढ़ाया जाता है। अफ़ग़ानिस्तान में औपचारिक हिंदी भाषा एवं साहित्य पढ़ाने की बात जब आती है तब हिंदी विभाग, नंगरहार विश्व विद्यालय का नाम अवश्य लेना पड़ता है।

भारत सरकार हिंदी भाषा को विश्व भाषा बनाने के लिए विश्व में अपना प्रयास लगातार करती रही है, अफ़ग़ानिस्तान में दुर्भाग्यवश से भारतीय संस्कृति एवं भारतीय साहित्य से संबंधित भारतीय सरकार के सहयोग से कोई कार्यक्रम, संगोष्ठी या प्रतियोगिता नहीं करायी जाती है। आगर भारत से संबंधित तथा हिंदी से संबंधित जब कोई त्यौहार भारतीय दूतावास मनाया जाता है तो उसे अपने दुतावास में बहुत सीमित लोगों को आमंत्रित कर के मनाते हैं, पर आम लोगों के दिलों से हिंदी एवं हिन्दुस्तानी (भारतीय) संस्कृति के प्रति प्यार और मुहब्बत कोई भी किसी भी संझौते पर निकाल नहीं सकता है।

अफ़ग़ानिस्तान में अगर हिंदी भाषा या साहित्य के बारे में या इसे पख़्तो भाषा में सीखने के बारे में और या इस पर कोई विशेष खोज अगर हुई है तो वह शायद हिंदी विभाग, नंगरहार विश्व विद्यालय का देन ही हो सकता है, जिसका संक्षिप्त में निम्न प्रकार विवरण किया जा सकता है-

1. 'ओ पख्तो में हिन्दी सीखें', यह पुस्तक ज़बीहुल्लाह फ़िक्री द्वारा उसके स्नातक अन्तिम वर्ष (2010) में लिखी गयी है, जो हिंदी एवं पख़्तो भाषाओं के इतिहास में अपने प्रकार की प्रथम इकाई है।
2. 'पख्तो-हिन्दी-अंग्रेज़ी शब्दकोश', यह शब्दकोश भी ज़बीहुल्लाह फ़िक्री द्वारा लिखा गया है जो अपने प्रकार में अफ़ग़ानिस्तान का प्रथम हिंदी शब्दकोश है। इस शब्दकोश की अच्छाई यह है कि लेखक ने पख़्तो शब्दों का हिंदी देवनागरी लिपि में रूपांतरण किया है और उसी प्रकार हिंदी के शब्दों का पख़्तो लिपि में रूपांतरण किया है जो हिंदी एवं पख़्तो भाषा-भाषी एक दूसरे की लिपि जानने के बिना भी एक दूसरे के शब्दों को अपनी लिपि में पढ़ और समझ सकते हैं। इस शब्दकोश को भारतीय दूतावास काबुल ने दूसरी बार हिंदी प्रेमियों के लिए प्रकाशित किया। स्मरणीय है कि ऊपर दो रचनाओं एवं अफ़ग़ानिस्तान में हिंदी के प्रचार-प्रसार में प्रशंसनीय भूमिका निभाने के आधार पर लेखक को नवे विश्व हिंदी सम्मेलन में पुरस्कार भी मिला जो दक्षिण अफ्रीका में 2012 को आयोजित किया गया था। हिंदी साहित्य के आदिकाल का परिचय, हिन्दी एवं पख़्तो भाषाओं के फोनोलॉजी का तुलनात्मक अध्ययन एवं हिंदी और पख़्तो भाषाओं के मोरफोलोजी का तुलनात्मक अध्ययन लघु शोध प्रबंध भी ज़बीहुल्लाह फ़िक्री द्वारा उनके शैक्षिक स्तर बढ़ाने के लिए पख़्तो भाषा में लिखे गये हैं।[4]

अफ़ग़ानिस्तान न एक ऐसा देश है जहाँ के बहुत से लोग भारत जाते रहते हैं। हालांकि पुराने समय में वहाँ रोजगार के ऐसे अवसर नहीं थे कि भारतीय नागरिक भी वहाँ आ-जा सकें। पिछले 40 वर्षों से जारी राजनीतिक परिस्थितियों के कारणों भारतीयों का अफ़ग़ानिस्तान आना-जाना काफ़ी कम हो गया था। केवल सिख समुदाय के लोग नियमित रूप से भारत और अफ़ग़ानिस्तान के बीच आवा-जाही करते रहे हैं। हालांकि वर्तमान समय में अगर कोई भारतीय नागरिक अफ़ग़ानिस्तान आता है तो उसे किसी प्रकार की विशेष परेशानी नहीं होती है। आप वहाँ पूरी तरह से सुरक्षित रहेंगे। अगर आपके पास फुर्सत का समय हो तो एक बार अफ़ग़ानिस्तान की यात्रा अवश्य करें। यह देश बहुत ही सुंदर और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध है। मगर अफ़ग़ान लोगों को भारत आने-जाने के कारण एवं हमारी प्राचीन समान संस्कृति एवं धर्म के कारण पुराने ज़माने से अफ़ग़ान लोगों के साधारण जीवन में हमें हिंदी भाषा, हिंदी रीति रिवाज आदि का झलक देखने को बहुत मिल रहे हैं।[5]

हिंदी-पख़्तो में समान शब्दों का प्रयोग भी मिलता है। पख़्तो भाषा बोलने वालों को हिंदी भाषा सीखने में, दोनों भाषाओं के समान शब्द अत्यधिक सरलता लाता है। पख़्तो एवं हिंदी दोनों भाषाओं में अधिक मात्रा में ऐसे शब्द हैं, जिनका प्रयोग अर्थ एवं रूप के आधार पर दोनों भाषाओं में समान रूप से प्रयोग में लाये जाते हैं।[6] इन शब्दों में से अधिक मात्रा में वे शब्द आते हैं, जो दोनों भाषाओं में आगत शब्द माने जाते हैं। दोनों भाषाओं के ये आगत शब्द अरबी-फ़ारसी भाषा के हैं। हिंदी एवं पख़्तो भाषाओं में ऐसे समान शब्द भी हैं, जो दोनों भाषाओं के

अपने शब्द माने जाते हैं।[7] इस तरह शब्दों में अधिक उन वर्णों का प्रयोग किया जाता हैं, जो हिंदी एवं पख़्तो के अपने मूल वर्ण माने जाते हैं।, जैसे ट, ड, ण, ड, प, ढ़ आदि। पख़्तो एवं हिंदी दोनों भाषाओं में वे समान शब्द जो दोनों भाषाओं के माने जा सकते हैं उनके उदाहरण देखें- सड़क, अंडा, अखाड़ा, अटकल, अटाला, अनपढ़, उलटी, कंडोल, कटाई, कटार, कटैला, कटोरा, कपड़ा, कबाड़, कबाड़ी, करोड़, करोड़पति, कोटवाल, कोटवाली, खिड़की, खिलाड़ी, खोपड़ी, गड़बड़, गाँडू, गाड़ी, गाड़ीवान, गीदड़, गुंडा, गुड़, गुड्डी, घड़ी, चंडाल, चटक, चटनी, चटपटी, चपेड़, चिट्टी, छेड, जोड़, झंडा, झटका, टंकार, टंकी, टकोर, टक्कर, टहू, टमाटर, टॉका, टापू, टुकड़ा, टोकरी, टोपी, ठगी, ठीक, पकौड़ा, पगड़ी, पट्टी, पटाका, पटी, पडू, पाठक, पेटी, पेड़ा, बाल्टी, मंडव, मंडी, मटर, रगड़ा, रबड़, रबड़ी, रोटी, लड्डू, लोटा, साटन आदि।[8]

- **उज्बेकिस्तान में हिंदी :**

भारत का पुरातन इतिहास, भारतीय कला और भारतीय दर्शन विश्व भर के सभी देशों के लोगों को अपनी तरफ़ आकर्षित करते हैं। अनेक साल पहले उज्बेक टेलीविजन पर उज्बेक भाषा में भाषांतरित 'महाभारत' और 'रामायण' नामक सीरियलों का प्रचार हुआ था। इस प्रचार के बाद उज्बेक लोगों के बीच हिंदी के प्रति रुचि आधिक बढ़ गई। ताशकन्द स्थित लालबहादुर शास्त्री भारतीय सांस्कृतिक केंद्र द्वारा प्रारंभ किया गया हिंदी भाषा का एक साल का सर्टिफिकेट कोर्स इसका प्रमाण है। उज्बेकिस्तान के 7 वर्ष से लेकर 70 वर्ष तक के निवासी हिंदी सीखने के लिए इस कोर्स में प्रवेश लेते हैं। ताशकन्द स्थित भारतीय सांस्कृतिक केंद्र लगभग 15 वर्षों से यह कोर्स चला रहा है। इस कोर्स में हिंदी सिखाने का कार्य ताशकन्द स्थित प्राच्य विद्या संस्थान के हिंदी के शिक्षक करते हैं।

उज्बेकिस्तान में हिंदी की पढ़ाई लगभग 70 साल पहले आरंभ हुई थी, जब ताशकन्द विश्वविद्यालय में पूर्वी (एशियाई) भाषाशास्त्र संकाय प्रारंभ हुआ था। इस संकाय में तब अरबी, फ़ारसी, अफ़ग़ानी, चीनी आदि भाषाओं के साथ-साथ भारतीय भाषाएँ हिंदी और उर्दू भी सिखाई जाने लगी थीं। फिर 1960 से ताशकन्द विश्वविद्यालय के पूर्वी भाषा विश्वविद्यालय के छात्र भाषा-अभ्यास के लिए भारत भी जाने लगे।[9]

1991 में पूर्वी भाषा संकाय को ताशकन्द विश्वविद्यालय से भिन्न करके उसे ताशकन्द प्राच्य विद्या इंस्टीट्यूट में बदल दिया गया। इस इंस्टीट्यूट में हिंदी विभाग का नाम भी बदलकर **'दक्षिणी एशियाई भाषा विभाग'** रख दिया गया। इस विभाग में वर्तमान में हिंदी और उर्दू भाषाओं के साथ-साथ मलेशियाई, इण्डोनेशियाई तथा वियतनामी भाषाएँ भी पढ़ाई जाती हैं।

लगभग पाँच-छः वर्ष पूर्व उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपति ने एक नया आदेश जारी किया है, जिसके अनुसार उज्बेक विज्ञान अकादमी में शामिल कार्यरत ताशकन्द प्राच्य विद्या इंस्टीट्यूट को **'हस्तलिखित पाण्डुलिपि केन्द्र'** से जोड़ दिया गया है। वास्तव में बात यह है कि ताशकन्द प्राच्य विद्या इंस्टीट्यूट में भिन्न-भिन्न भाषाओं की विभिन्न देशों से लाई गई सैकड़ों प्राचीन कालीन हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ मौजूद हैं, जिन्हें बड़े ध्यान से बेहद सुरक्षित रखा जाता है। इन पाण्डुलिपियों में आधिक सी भारतीय पाण्डुलिपियाँ भी हैं। चूँकि इनमें से अधिकांश पाण्डुलिपियाँ हिंदी व उर्दू भाषाओं में हैं और इतिहास, दर्शन, भाषा-विज्ञान और साहित्य से संबंध रखती हैं, इसलिए इनका पढ़ाई करने के लिए हिंदी व उर्दू भाषाएँ आना जरूरी है।

ताशकन्द प्राच्य विद्या संस्थान में पढ़ने वाले छात्र हिंदी भाषा, हिंदी साहित्य, भारतीय अर्थशास्त्र और भारतीय नीतिशास्त्र जैसे विषयों में बी.ए., एम.ए. और पीएच.डी. की डिग्रियाँ प्राप्त करते हैं। इंस्टीट्यूट में पढ़ाने वाले प्राध्यापक काफी ऊँचे स्तर के विद्वान हैं। ये सभी प्राध्यापक भारत जा चुके हैं और वहाँ प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। हर प्राध्यापक अपने विषय का विशेषज्ञ है, जैसे प्रोफेसर आज़ाद शमातोव हिंदी की बोलियों के, डॉ. हानजरीफा बेगीजोवा संस्कृत की, डॉ. तमारा खोजायेवा भारत और उज्बेकिस्तान के बीच साहित्यिक संबंधों की, डॉ. उल्फ़त मुहीबोवा भक्ति साहित्य की, डॉ. सिराजुद्दीन नुरमातोव हिंदी और नेपाली भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन के और डॉ. मुहैय्या अब्दुरहमानोवा ग़ालिब की विशषज्ञ हैं।[10]

ताशकन्द प्राच्य विद्या इंस्टीट्यूट में तालीम प्राप्त करने वाले बी. ए. और एम. ए. के छात्र भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्तियाँ पाकर दिल्ली विश्वविद्यालय, पूना विश्वविद्यालय, मद्रास विश्वविद्यालय, बंगलुरू विश्वविद्यालय और कोलकाता विश्वविद्यालय जैसी शिक्षा संस्थाओं में आगे प्रशिक्षण पाने के लिए जाते हैं।

उज्बेकिस्तान में कुछ विशेष प्राथमिक विद्यालयों और उच्च्वतर माध्यमिक विद्यालयों में भी हिंदी भाषा पढ़ाई जाती है। ताशकन्द के स्कूल नं.24 में प्राथमिक कक्षाओं से ही हिंदी की पढ़ाई शुरू हो जाती है। यहाँ बच्चे दूसरी कक्षा से हिंदी सीखना शुरू कर देते हैं। 1974 से इस स्कूल को **'लालबहादुर शास्त्री स्कूल'** कहा जाता है। स्कूल के प्रांगण में शास्त्री जी की प्रतिमा भी लगी हुई है। इस प्रतिमा का अनावरण विश्वप्रसिद्ध भारतीय फ़िल्म अभिनेता राज कपूर ने किया था। ताशकन्द प्राच्य विद्या इंस्टीट्यूट से जुड़ी दो उच्चतर माध्यमिक शिक्षा संस्थाओं में भी हिंदी और उर्दू भाषाएँ सिखाई जाती हैं।

किसी भी भाषा सीखने के लिए पाठ्य-पुस्तकों का होना भी बहुत जरूरी होता है। इस दिशा में उज्बेकिस्तान के हिंदी-प्राध्यापकों ने आधिक काम किया है। 1960 में उज्बेक प्राध्यापकों ने हिंदी की पहली पाठ्य-पुस्तक तैयार की थी। प्राथमिक स्तर पर उज्बेकिस्तान के बच्चों को हिंदी पढ़ाने के लिए विशेष तौर पर पाठ्य-पुस्तकें तैयार की गई। आज पहली कक्षा से आठवीं कक्षा तक विषय की पाठ्य-पुस्तकें हैं। विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थाओं के छात्रों को हिंदी पढ़ाने के लिए अलग से दूसरे प्रणाली की पाठ्य-पुस्तकें बनाई गई। सोवियत संघ का विघटन होने के बाद और उज्बेकिस्तान के एक अलग स्वतंत्र राष्ट्र बन जाने के बाद उज्वेकी भाषा लातिनी लिपि में लिखी जाने लगी। इसके पश्चात उज्वेक भाषा में लिखी गई हिंदी की पाठ्य-पुस्तकों की जरूरतें भी बढ़ने लगीं। इन पाठ्य-पुस्तकों की कमी को प्रो. बयात रखमातोव तथा मवजूदा सादीकोवा ने पूरा किया। 2008 में दोनों ने मिलकर लातिनी लिपि वाली उज्वेकी में **'हिंदी भाषा'** के नाम से एक पाठ्य-पुस्तक बनाई, जिसे उज्बेकिस्तान में आज तक की हिंदी की सर्वोत्तम पाठ्य-पुस्तक माना जाता है। अब दोनों प्राध्यापक मिलकर उस पाठ्य-पुस्तक का दूसरा भाग तैयार कर रहे हैं। ये तो हैं हिंदी भाषा के अध्ययन-अध्यापन की उपलब्धियाँ उज्बेकिस्तान में।[11]

उज्बेकिस्तान में भारतीय साहित्य के अध्ययन-अध्यापन की बात करें, चार वर्षीय बी.ए. हिंदी के कोर्स में उज्बेकिस्तान में छात्रों को वेदों से लेकर 20वीं सदी तक का साहित्य पढ़ाया जाता है। एम.ए. हिंदी में यह कोर्स काफ़ी बढ़ जाता है और छात्रों को भारतीय साहित्यशास्त्र (आलोचना), हिंदी कविता, भक्ति साहित्य, दक्षिण भारतीय साहित्य, पंजाबी साहित्य तथा भारत की भिन्न-भिन्न भाषाओं के बीच साहित्यिक संबंध आदि विषय पढ़ाए जाते हैं। हिंदी साहित्य पर भी उज्बेक विद्वानों ने बहुत-सी किताबें लिखी हैं। हिंदी साहित्य पर प्रमुख रूप से आजकल डॉ. तमारा खोदजाएवा और डॉ. उल्फत मुहीबोवा कार्य कर रही हैं। इन दोनों ने अपने-अपने विषय से संबंधित बहुत सी किताबें लिखी हैं। जैसे तमारा खोदजाएवा ने बी.ए. के छात्रों के लिए 'हिन्दी साहित्य' नामक जो पाठ्य-पुस्तक तैयार की है, उसमें 18वीं सदी के हिंदी लेखकों से लेकर 20वीं सदी के अंत तक के हिंदी साहित्य के बारे में बताया गया है। उनकी अन्य पुस्तकों के नाम हैं—'भारत और उज्बेकिस्तान के साहित्यिक सम्बन्ध', 'भारत का पश्चिमी देशों के साथ सम्बन्ध', 'पंजाबी साहित्य', 'अमृता प्रीतम का गद्य' और 'उर्दू गजल'।

डॉ. उल्फत मुखीबोबा ने भी बी.ए. के छात्रों के लिए 'हिन्दी साहित्य' नामक अपनी पाठ्य-पुस्तक में वैदिक साहित्य से लेकर 18वीं सदी तक के साहित्य की चर्चा की है। एम.ए. के छात्रों के लिए उन्होंने 'भक्ति साहित्य', 'दक्षिणी भारतीय साहित्य', 'वार्ता साहित्य' और 'हिन्दी कविता' जैसी पुस्तकें लिखी हैं।[12]

- **जापान में हिंदी :**

"सन् 1964 में 'अंक' नाम का एक पत्र निकला। जापान-भारत मैत्री संघ के बैनर तले 'सर्वोदय' पत्र का प्रकाशन होता है। वस्तुतः यह एक धार्मिक पत्र है। जापान का प्रथम हिंदी पत्र 'ज्वालामुखी' है जो सितंबर 1980 में टोकियो से प्रकाशित हुआ। इसके प्रथम संस्थापक-संपादक श्री योशिअकि सुजुको थे।[13]

जापान भारतेतर मूल वासियों का राष्ट्र है लेकिन ऐसा नहीं कि भारतीय मूल के अलावा अन्य देशों में हिंदी का कोई माहौल नहीं। असल में उन देशों में भी हिंदी के प्रति आकर्षण और आस्था मिलती है जो भारतीय मूल के

नहीं हैं। जापान इसका सशक्त प्रमाण है। यह वह देश है जहाँ हिंदी पढ़ने-पढ़ाने की सुविधा है। यहाँ हिंदी समाचार पत्र, पत्र-पत्रिकाएँ, सृजनशील लेखन, अनुवाद और अनुसंधान आदि का जिस धड़ल्ले से प्रचलन परिलक्षित होता है उसे देखकर विश्वास नहीं होता कि भारतेतर मूल के देश जापान में भी हिंदी के लिए ऐसा अनुकूल माहौल हो सकता है। वस्तुतः जापान में शिक्षा का माध्यम जापानी भाषा है। यहाँ पर साहित्य संस्कृति, दर्शन, व्यवसाय, वाणिज्य, तकनीकी एवं विज्ञान आदि विषयों की पाठ्य पुस्तकें जापानी में निर्मित हैं। लेकिन जापान में हिंदी सीखने वाले जापानी मूल के लोग बड़े उत्साह से हिंदी पढ़ते हैं। भारत से डॉ. कृष्णदत्त पालिवाल, डॉ. कैलासचंद्र भाटिया जैसे कई लोग कई बार जापान में हिंदी का अध्यापन करके आए हैं।[14]

वास्तव में भारत-जापान संबंधों का इतिहास भी प्राचीन है। जापान में हिंदी अध्ययन-अध्यापन के प्रमुख दो केंद्र मिलते हैं जिनमें से पहला है टोकियो विश्वविद्यालय (Tokyo University of Foreign studies) और दूसरा है ओसाका विश्वविद्यालय (Osaka University of Foreign studies)। इन दोनों विश्वविद्यालयों में आज से लगभग 117 साल पहले हिंदी-उर्दू अध्ययन-अध्यापन का सिलसिला प्रारंभ हुआ। टोकियो विश्वविद्यालय में सन् 1908 में हिंदुस्तानी तमिल प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम (Certified Course of Hindustani and Tamil) शुरू हुआ था। आगे 1911 में 'डिग्री कोर्स ऑफ हिंदुस्तानी' शुरू हुआ। पढ़ाने वालों में विद्वान प्रोफेसर रेइचि गामो, प्रोफेसर एइजो सावा तथा विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में हिदुस्तानी भाषा के लिए मोहम्मद बरकतउल्ला सेवारत थे। टोकियो विश्वविद्यालय में प्रो. दोई ने और ओसाका विश्वविद्यालय में प्रो. एइजो सावा ने हिंदी उर्दू अध्ययन-अध्यापन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत की आजादी की प्राप्ति के साथ इन दोनों विश्वविद्यालयों में भी हिंदी विभागों की स्थापना हुई। हिंदी में शोध कार्य भी होने लगे। प्रो. दोई के कई बुद्धिमान छात्रों में प्रो. तोशियो तनाका का नाम विशेष उल्लेखनीय है जिन्होंने टोकियो विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष के रूप में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उनके बाद यहाँ आगे चलकर प्रो. ताकेशी फुजिई, प्रो. मिजुनो, प्रो. केईको शिराई (मेम) और प्रो. सुरेश ऋतुपर्ण (विजिटिंग प्रोफेसर) अध्यापन कार्य कर रहे हैं। टोकियो विश्वविद्यालय में पचास हजार से ज्यादा हिंदी ग्रंथ उपलब्ध हैं। ओसाका विश्वविद्यालय में हिंदी अध्यापन से जुड़े महत्त्वपूर्ण विद्वानों में प्रो. कोगा, टोमियो मिजोकामि, प्रो. अकिरा ताकाहाशि तथा प्रो. हिरोको नागासाकी आदि हैं। जापान में हिंदी शिक्षा के अलावा भारतीय संस्कृति, भोजन, वेशभूषा आदि का पर्याप्त परिचय दिया जाता है। छात्रों द्वारा भारतीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। हिंदी नाटकों का मंचन होता है। दूरदर्शन के चैनल से हिंदी फिल्में दिखाई जाती है। दर्शकों की संख्या भी पर्याप्त है। 'रेडियो जापान' की विश्व प्रसारण सेवा से भी प्रति-दिन हिंदी कार्यक्रमों का प्रसारण होता है। सुश्री तामकि मात्सुओका एक सुप्रसिद्ध नाम है जो हिंदी फिल्मों की प्रशंसिका ही नहीं अपितु प्रचारिका भी है।[15]

जापान जैसे राष्ट्र के आठ विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्यापन को सुविधा होना हिन्दी के लिए निश्चय ही गौरव की बात कहनी होगी। जापान में करीब सत्तर साल पहले प्रो. क्योमो दोई ने टोकियो विश्वविद्यालय में हिंदी की शिक्षा शुरू की। प्रयाग विश्वविद्यालय से एम. ए. तथा पीएच्. डी. करने वाले इस जापानी हिंदी विद्वान ने 'गोदान' का जापानी में अनुवाद किया था जिसकी पाँच लाख से अधिक प्रतियाँ बिक चुकी हैं।

जापान में हिंदी की अनेक पत्रिकाएँ प्रकाशित मिलती हैं। 'ज्वालामुखी' हिन्दी की एक ऐसी पत्रिका रही है जिसे योशियाकि सुजुकि चलाते थे और शर्त यह होती कि इसमें केवल जापानी भाषी द्वारा लिखी गई हिंदी रचना ही स्थान पाएगी। 'सर्वोदय' जैसी हिंदी पत्रिका विगत लगभग चालीस साल से चल रही है। 'जापानी भारती' हिंदी की वह मासिक पत्रिका है जो अप्रवासी भारतीयों द्वारा चलाई जा रही है। जापान में हिंदी सीखने के मूल में भारत प्रेम भी है।"[16]

निष्कर्ष :

हिंदी की वैश्विक स्थिति डॉ. सीताराम शास्त्री के अनुसार "हिन्दी मात्र एक देश की भाषा नहीं, हिंदी एक नए विश्व धर्म और अन्तर्राष्ट्रीय अनुशासन तथा मानवीय समरसता का सूत्रपात करने वाली भाषा है। हिंदी की लोकप्रियता का औजार जहाँ इसके बोलने-समझने वालों की विशाल जनसंख्या, इसमें संप्रेषणीयता के अद्भुत गुणों की विद्यमानता, इसकी सरस, मीठी और लचीली प्रकृति और अन्य भाषाओं के शब्दों को सहजता से पचा लेने की

इसकी क्षमता है। वहीं इसकी अधिकारिक लिपि देवनागरी भी है, जो एक प्रकार से इसके लिए वरदान है, क्योंकि नागरी लिपि विश्व की सबसे अधिक वैज्ञानिक और ध्वन्यात्मक लिपि है।"

अफ़ग़ानिस्तान में हिंदी : अफ़ग़ानिस्तान के लोगों का भारत भूमि में आना-जाना लगातार रहा है। प्राचीन काल से भारत और अफ़ग़ानिस्तान की गहरी मित्रता रही है। प्राचीन काल से दोनों देशों के आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबंध बहुत अच्छे रहे हैं, इसलिए दोनों देशों के मूल वासी हमेशा संपर्क में रहे हैं। प्राचीन युग से ले कर अब तक अफ़ग़ानिस्तान में ऐसे लोग बहुत देखने को मिलते हैं, जिनको हिंदी भाषा का मौखिक रूप खूब आता हो। इस नये युग में दो और महत्वपूर्ण कारण है, जिससे अफ़ग़ानिस्तान के कुछ लोगों को हिन्दी भाषा के मौखिक रूप से परिचित होना पड़ा।

हिंदी फ़िल्में वह पहला आधार हैं जहाँ भारत अफ़ग़ानिस्तान मिलते हैं। हिंदी फिल्में जिस तरह पूरी दुनिया में चलती है, उससे अधिक मात्रा अफ़ग़ानिस्तान में भी चलती हैं बल्कि भारत की तरह ही हिंदी फिल्में एवं हिंदी फिल्मों के गाने पूरे अफ़ग़ानिस्तान में लोग बड़े दिलचसपी एवं चाव से देखते और सुनते हैं। आम बाज़ार में चलते समय किसी न किसी दुकान से हिंदी गानों की ध्वनि ज़रूर सुनने को मिलती है। अफ़ग़ानिस्तान के टी.वी एवं एफ.एम रेडियों से लगातार आपको हिंदी गाने सुनने को मिलते हैं और लोग उसके फरमाइश भी बहुत देते हैं। वर्तमान युग में अधिक प्रतिशत अफ़ग़ान लोग विशेष कर जवान लोग हिन्दी फिल्मों के आदाकारों से खूब परिचित हैं। अन्तिम चार दशकों से बहुत सारे अफ़ग़ान लोगों को पाकिस्तान जाना एवं वहाँ बसना पड़ा तो पाकिस्तान में रह कर उर्दू भाषा सीख गये, जिसका मौखिक रूप आज की हिंदी के मौखिक रूप से काफ़ी हद तक मिलता जुलता है। अनौपचारिक स्तर पर हम यह कह सकते हैं कि अफ़ग़ानिस्तान के अधिकतर युवक-युवतियों को हिंदी भाषा का मौखिक रूप थोड़ा बहुत आता ही है।

अफ़ग़ानिस्तान में अगर हिंदी भाषा या साहित्य के बारे में या इसे पख़्तो भाषा में सीखने के बारे में और या इस पर कोई विशेष खोज अगर हुई है तो वह हिंदी विभाग, नंगरहार विश्वविद्यालय का देन ही हो सकता है।

अफ़ग़ानिस्तान में हिंदी भाषा अफ़ग़ानियों के लिए एक विदेशी भाषा ही है पर अन्य विदेशियों से अफ़ग़ान लोग हिंदी भाषा को तुरंत एवं स्पष्ट रूप से सीख सकते हैं, उसका एक कारण यह है कि पख़तो एवं हिंदी भाषा में शब्द भंडार एवं संरचना के आधार पर समान विशेषताएँ पायी जाती है।

उज्बेकिस्तान में हिंदी : कई साल पहले उज्बेक टेलीविजन पर उज्बेक भाषा में अनूदित 'महाभारत' और 'रामायण' नामक सीरियलों का प्रसार हुआ था। इस प्रसारण के बाद उज्बेक लोगों के बीच हिंदी के प्रति रुचि पर्याप्त बढ़ गई। ताशकन्द स्थित लालबहादुर शास्त्री भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा आरंभ किया गया, हिंदी भाषा का एक साल का सर्टिफिकेट कोर्स इसका प्रमाण है। उज्बेकिस्तान के 7 साल से लेकर 70 वर्ष तक के निवासी हिंदी सीखने के लिए इस कोर्स में प्रवेश लेते हैं। ताशकन्द स्थित भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र पिछले निकट 15 साल से यह कोर्स चला रहा है। इस कोर्स में हिंदी सिखाने का कार्य ताशकन्द स्थित प्राच्य विद्या संस्थान के हिंदी के शिक्षक करते हैं।

वैसे उज्बेकिस्तान में हिंदी की अध्ययन लगभग 70 वर्ष पहले शुरू हुई थी, जब ताशकन्द विश्वविद्यालय में पूर्वी (एशियाई) भाषाशास्त्र संकाय शुरू हुआ था। इस संकाय में तब अरबी, फ़ारसी, अफ़ग़ानी, चीनी आदि भाषाओं के साथ-साथ भारतीय भाषाएँ हिंदी और उर्दू भी सिखाई जाने लगी थीं। फिर 1960 से ताशकन्द विश्वविद्यालय के पूर्वी भाषा विश्वविद्यालय के छात्र भाषा-अभ्यास के लिए भारत भी जाने लगे।

सन् 1991 में पूर्वी भाषा संकाय को ताशकन्द विश्वविद्यालय से अलहदा करके उसे ताशकन्द प्राच्य विद्या इंस्टीट्यूट में बदल दिया गया। इस इंस्टीट्यूट में हिंदी विभाग का नाम भी बदलकर **'दक्षिणी एशियाई भाषा विभाग'** रख दिया गया। इस विभाग में आजकल हिंदी और उर्दू भाषाओं के साथ-साथ मलेशियाई, इण्डोनेशियाई तथा वियतनामी भाषाएँ भी पढ़ाई जाती हैं।

जापान में हिंदी : जापान में हिंदी भारतीय भाषाओं के अध्ययन-अध्यापन का इतिहास बहुत पुराना है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगी कि जापान में हिंदी-उर्दू शिक्षण की परंपरा को आरंभ हुए 117 वर्ष पूरे हो गए हैं। अन् 1908 में तोक्यो विदेशी विद्यालय (Tokyo School of Foreign Languages TSFL) में हिंदुस्तानी और तमिल भाषा की आरंभ की गई। तब दोनों भाषाएँ सर्टिफिकेट और दिप्लीमा के रूप में पढ़ाई जाती थीं। उसके बाद सन् 1911 में हिंदुस्तानी भाषा को स्वतंत्र विभाग का दर्जा दिया गया और इसके अंतर्गत डिग्री कोर्स की पढ़ाई शुरू हो गई। कई कारणों से तमिल विभाग आगे नहीं चल सका। तब से आज तक प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान भी स्थगन के विना पढ़ाई जारी रही है। इसी बीच सन् 1949 में TSFI का नाम बदलकर तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ स्टडीज सन् 1961 हिंदुस्तानी विभाग उर्दू और हिंदी के दो स्वतंत्र विभागों में विकासशील हो गया तथा सन् 1966 में एम.ए, और सन् 1992 में पीएच.डी. स्तर का अध्यापन भी शुरू हो गया। फिर सन् 2012 के अप्रैल में बढ़ते भारत-जापान संबंध को देखते हुए नवीन सिरे से बँगला विभाग भी कायम किया गया। आजकल इन तीनों विभागों में संस्कृत, पालि, मराठी, नेपाली, पंजाबी, सिंधी, मलयालम और तमिल भाषाएँ सर्टिफिकेट कोर्स के रूप में पढ़ाई जाती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी की दशा, डॉ. दर्शन पाण्डेय का आलेख, International Journal of Applied Research, 2016, पृष्ठ सं.725
2. विश्व फलक पर बढ़ते हिंदी के कदम, डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्त का आलेख, विश्व हिंदी पत्रिका 2024, विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस, पृष्ठ सं.121
3. https://hi.wikipedia.org/wiki/afganistan
4. हिंदी की मानक वर्तनी, कैलाश चंद्र भाटिया, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
5. पख़्तो वयपोहनः अव वयरगावनः, मुजाविर अहमद ज़ियार, मुमंद ख्परंदुयः टोलना, जलालाबाद, 2013
6. पख़्तो अव पख्तुनवली द पख्तो द निजात लार, नूरज़इ अब्दुलहलीम, 2011
7. द पख़्तनो नस्ली सेड़नः, असर जान, पिशावर जदून प्रेस, 2012
8. https://www.nature.com/articles/s41599-022-01489-7
9. वैश्विक हिंदी परिदृश्य, सं.कुमार गौरव मिश्रा व कविता सिंह चौहान, उज्बेकिस्तान में हिन्दी भाषा और साहित्य, डॉ. उल्फ़त मुहीबोवा का आलेख, अनंग प्रकाशन, बी-107/1, गली मन्दिर वाली, समीप रबड़ फैक्ट्री, उत्तरी घोण्डा, दिल्ली, संस्करण— 2020, पृष्ठ सं.71
10. वही, पृष्ठ सं.72
11. वही, पृष्ठ सं.73
12. वही, पृष्ठ सं.74
13. विश्व की हिंदी पत्रकारिता और पत्रिकाएँ, डॉ.कामता कमलेश का आलेख, विश्व हिंदी पत्रिका 2012, विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस, पृष्ठ सं.29
14. विश्वमंच पर हिंदी : विविध आयाम, प्रो.(डॉ.) अर्जन चव्हाण, 104A/80C, रामबाग़, कानपुर, संस्करण— प्रथम संस्करण, 2021, पृष्ठ सं.35
15. वही, पृष्ठ सं.36
16. वही, पृष्ठ सं.37

संपर्क :

शोधार्थी : मलिक मुहम्मद

भाषा एवं साहित्य विद्यापीठ, हिन्दी विभाग

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय

(केंद्रीय विश्वविद्यालय), रायबरेली रोड,

विद्या विहार, लखनऊ- 226025